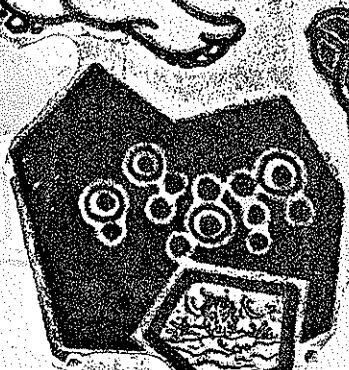
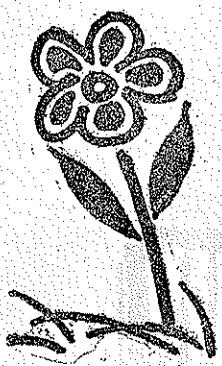


kissekahani.com



विनोदा-कथा-माला-२

kissekahani.com



kissekahani.com

kissekahani.com

kissekahani.com



कहानियों की बात

कहानियाँ किसे प्रिय नहीं होतीं ? वे किसी सन्त के, साधक के, भक्त के, आचार्य के हृदय से निकली हों—फिर तो कहना ही क्या ? सभी पर उनका सीधा असर होता है। श्रोता कोई क्यों न हो—बालक हो, वृद्ध हो, किशोर हो, तरुण हो, तरुणी हो, सब पर उनका प्रभाव पड़ता है। जीवन सुधरता है, जीवन में नयापन आता है, नयी प्रेरणा मिलती है।

विनोबाजी ने भूदान-आन्दोलन के पिछले तेरह वर्षों में भारत के कोने-कोने में भूदान का सन्देश फैलाया है। जाड़ा हो, गरमी हो, बरसात हो—वे तड़के उठकर सतत चलते हैं। ‘चरैवेति-चरैवेति’ उनका मंत्र रहा है। कर्म में अकर्म की साधना करते हुए उन्होंने देश को ऊपर उठाने में, सत्य, प्रेम और करुणा की त्रिवेणी प्रवाहित करने में अद्भुत कार्य किया है।

विनोबा बोलते हैं—रोज बोलते हैं, तरहन्तरह के श्रोताओं के बीच बोलते हैं। उनके प्रवचनों में सरलता होती है, गम्भीरता होती है और होती है मानव को ऊपर उठाने की प्रेरणा। कभी-कभी वे अपने प्रवचनों में सन्तों की, शास्त्रों की बोध-कथाएँ भी सुनाते हैं। ऐसी कथाएँ, जो मानव को युग-युग से प्रभावित करती थायी हैं।

विनोबा द्वारा कही गयी ‘हितं मनोहारि’ कथाओं का ही यह संकलन है। प्रस्तोता है भाई रामजनम सिंह ‘शिरीष’।

हम मानते हैं कि बच्चे और बूढ़े, किशोर और प्रीढ़, सभी इन कथाओं से भरपूर लाभ उठाकर अपना जीवन तो ऊपर उठायेंगे ही, दूसरों के उत्थान में भी सहायक होंगे।

—श्रीकृष्णदत्त भट्ट

कहानियों का क्रम

- सबसे कीमती हीरा पाँच
- हमें राजा नहीं चाहिए छह
- नाव जब बीच धार में पहुँची सात
- मुझे सन्तोष कैसे मिलता ? आठ
- पिताजी की यही आज्ञा है नौ
- दसरा कौन है ? दस
- आँखों में आँसू आ गये बारह
- तीर्थों में नहाने से कोई पवित्र नहीं हो जाता बारह
- मुनीम मालिक बन बैठा चौदह
- मैं सिखा सकता हूँ चौदह
- खूब सोना चाहिए सोलह
- दिल का दीया जलाये सत्रह
- न जीने की सुविधा... अट्ठारह
- ज्ञानी मिल गया उन्नीस
- जैसा जिसका रोग, वैसी उसकी दवा बीस
- सवाल हल हो गया बाईस
- ब्राह्मण ने विवेक खो दिया तेईस
- अनधि समता भक्षक बन गयी चौबीस
- कितना सुख मिल रहा था ! पच्चीस
- देवर्षि नारद को उत्तर मिल गया छब्बीस
- शंका डुबोती है अट्ठाईस



सबसे कीमती हीरा

एक किसान था। वह अपने खेत में हल चला रहा था। उसका लड़का भी बहीं था। उसे खेत में एक हीरा मिला। वह चम-चम चमक रहा था। चमक उसे बहुत अच्छी लगी। वह उसे लेकर खेलने लगा।

कुछ देर बाद वह लड़का हीरा लेकर घर पहुँचा। माँ को दिखाया। फिर साथियों को दिखाने घर से निकल पड़ा। साथियों ने चमकीले पत्थर को देखा तो वे माँगने लगे। उसने उन्हें दिया नहीं।



एक लड़के को वह हीरा बहुत पसन्द आ गया। वह रोते-रोते घर गया। उसने अपने पिताजी से कहा—“मुझे हीरा चाहिए।”

उसके पिताजी ने पूछा—“हीरा क्या चीज है?”

लड़के ने पिता से कहा—मैंने एक लड़के के पास देखा है। वह बहुत चमकता है। उसकी चमक बहुत अच्छी लगती है। आप वह किसी तरह उस लड़के से ले लोजिये।”

उसका पिता हीरेवाले लड़के के पिता के पास पहुँचा और पचास रुपये देकर वह हीरा ले आया। वह लड़का बहुत रोया; लेकिन पैसे के लोभ में उसका पिता हीरा बेबने के लिए मजबूर हो गया था।

कुछ दिनों बाद उसके पड़ोसी लड़के को वह हीरा पसन्द आ गया। वह हीरे के लिए मचल गया। उसके माता-पिता श्रीमान् थे। पांच सौ रुपये देकर उन्होंने हीरा खरोद लिया।

इस तरह उस हीरे की कीमत बढ़ती गयी। बढ़ते-बढ़ते उसको कीमत एक लाख तक पहुँच गयी।

लेकिन, क्या जिस आदमी ने उस हीरे को एक लाख रुपये में खरीदा, उसका एक सव्य सभी उससे पेट भर सकता है? फिर दुनियावाले ऐसे पत्थरों के पीछे क्यों पागल बने हैं?

पेट तो भरता है अनाज से, दूध से, धी से और मदखन से; फिर इन खाने की चीजों से बढ़कर दूसरा कोई हीरा नहीं हो सकता।

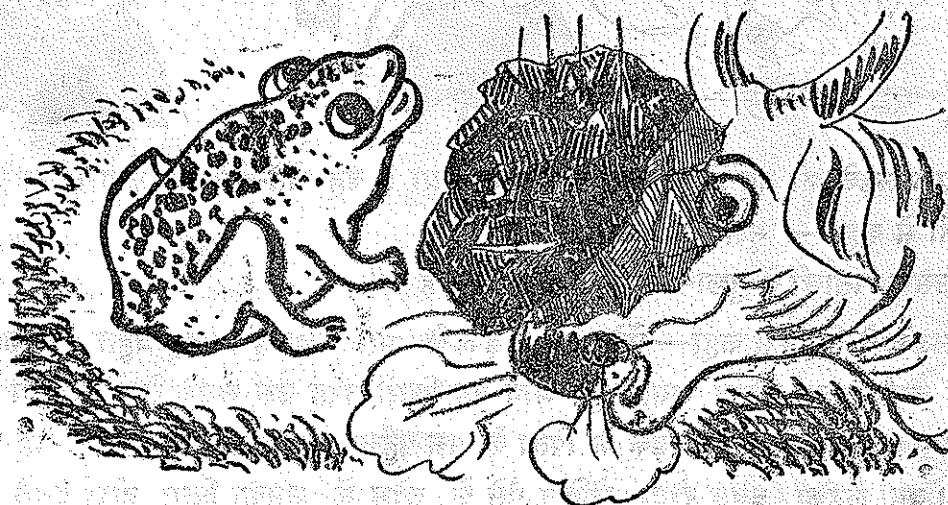
हमें राजा नहीं चाहिए

एक बार मेढ़कों ने भगवान् से प्रार्थना की—“भगवन्, हमारे लिए कोई राजा भेज दो।”

भगवान् ने एक बैल को उनका राजा बनाकर भेज दिया।

बैल के पाँव के नीचे दबकर ३०-४० मेढ़क मर गये।

“हमें ऐसा राजा नहीं चाहिए।”—मेढ़कों ने फिर प्रार्थना की—“कोई दूसरा राजा भेजिये।”



भगवान् ने एक बड़ा भारी पत्थर ऊपर से नीचे फेंक दिया। उस पत्थर के नीचे दबकर तीन-चार सौ मेढ़क मर गये। वे बहुत घबराये। उन्होंने कहा—“भगवन्, आपने यह क्या आफत भेज दी?”

भगवान् ने हँसते हुए जवाब दिया—“हमने जो बैल भेजा था, वह हमारा वाहन है; पर उससे तुम लोगों का काम नहीं बना। फिर हमने संगमरम्ब में चट्टान भेजी, जिस पर हम आसन लगाकर बैठते हैं। वह भी तुम लोगों को अच्छी नहीं लगी। इसलिए बिना राजा के हो तुम लोग रहो।”

तब से खेड़कों ने राजा का नाम लेना ही छोड़ दिया।

●

नाव जब बोच धार में पहुँची

गणित के एक अध्यापक की बात है। वह कहीं जा रहा था। दूरस्ते में एक नदी थी। नदी को नाव से पार करना था। मल्लाह बूढ़ा था। उससे अध्यापक ने पूछा—“व्या तुम गणित जानते हो?”



मैं नहीं जानता कि गणित व्या चौज है?”—मल्लाह बोला।

अध्यापक ने कहा—“तुम्हारी चार आने जिन्दगी बरबाद हुई।”

मल्लाह ने सिर झुकाकर सुन लिया।

अध्यापक ने फिर पूछा—“व्या तुम्हें भूगोल का ज्ञान है?

“भूगोल व्या बला है, यह भी नहीं जानता।”—मल्लाह बोला।

“तो तुम्हारी चार आने और जिन्दगी खत्म हो गयी।”—अध्यापक ने कहा।
मल्लाह अध्यापक की बातें बड़े गौर से सुनता जाता था और नाव खेता जाता था।
घीरे-धीरे नाव बोच धार में पहुँच गयी। इतन में जोरों की आँधी आ गयी। नाव डगमगाने लगी।

मल्लाह ने पूछा—“आपको तैरना आता है न ?”

अध्यापक ने कहा—“नहीं भाई, मुझे तैरना नहीं आता।”

मल्लाह ने कहा—“मेरी तो चार और चार आठ आने ही जिन्दगी बरबाद हुई, आपको तो सोलह आने खत्म होनेवाली है।”

बात अध्यापक की समझ में आ गयी। उसको आँखें खुल गयीं। उसकी समझ में आ गया कि किताबी जानकारी का घमण्ड धोखा है।

मुझे सन्तोष कैसे मिलता ?

एक स्त्री थी। उसके पाँच बेटे थे। वह अपने पाँचों बेटों को बहुत मानती थी। उसके बेटे भी आपस में बहुत प्रेम से रहते थे।



एक दिन पाँचों बेटे खेलने निकले। उनमें से एक कहीं खो गया। रात हो गयी। फिर भी वह नहीं आया। माँ परेशान हो उठी। वह निकल पड़ी ढूँढ़ने। उसने आसपास हर जगह

दूँढ़ा; लेकिन उसका कहीं पता न चला। निराश होकर वह घर लौट आयी। फिर उसने चारों बेटों को दूँढ़ने के लिए भेज दिया। उन्होंने भी बहुत दूँढ़ा, लेकिन उसका कहीं पता नहीं चला।

दूसरा दिन आया, चला गया। तीसरा दिन भी आया और चला गया; लेकिन भूले हुए बच्चे का कहीं पता न चला। माँ रात-दिन उस बच्चे का नाम ले-लेकर रोती रहती। घर में एक अजीब उदासी छायी रहती। चारों भाइयों को भी भाई के खो जाने का बहुत दुःख था।

आखिर एक दिन वह लड़का मिल गया। माँ की खुशी का ठिकाना न रहा। माँ की प्रसन्नता देखकर उसके चारों बेटों ने पूछा—“हम चारों तुम्हारे पास थे तब तुम्हें इतनी खुशी नहीं थी माँ, जितनी अब है। इसका कारण क्या है? क्या तुम भी पक्षपात करती हो?”

माँ ने जवाब दिया—“मेरे प्यारे बेटों, इसमें पक्षपात नहीं, माँ की ममता है। अभी तुम लोग माँ का दिल नहीं पहचानते। तुम चारों मेरे पास थे तो सुखी थे। लेकिन, भूला हुआ बेटा तो मेरे पास था नहीं; इसलिए वह दुःखी था। उसका दुःख दूर किये दिना मुझे सन्तोष कैसे मिलता?”

पिताजी की यही आज्ञा है

पिता और पुत्र कहीं जा रहे थे। गरमी के दिन थे। सूरज निकल चुका था। धूप तेज हो चली थी। पुत्र ने छाता लगा लिया।

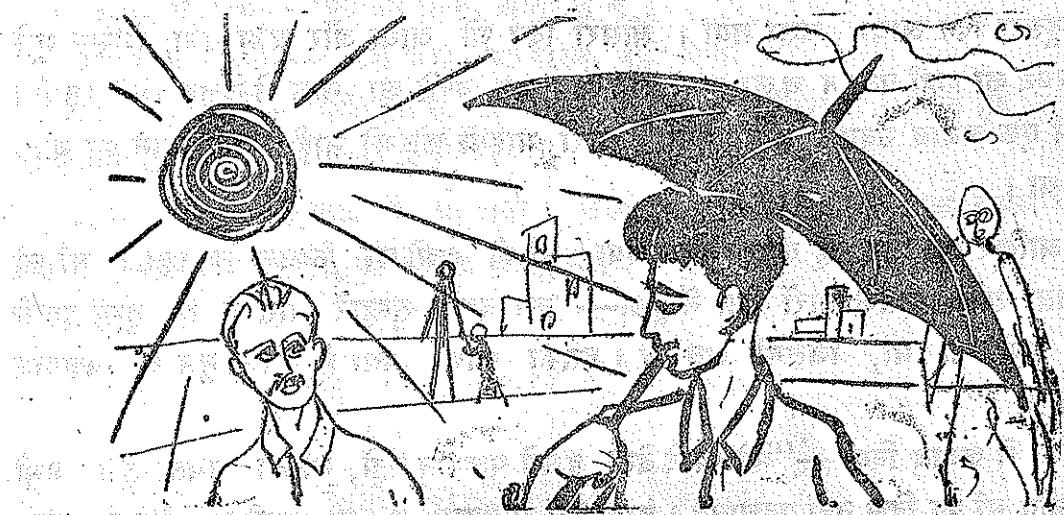
पिता ने कहा—“बेटे, छाता जरा पूरब को ओर रखा करो।”

पुत्र ने बैसा ही किया। बाप-बेटे दोनों की कड़ी धूप से रक्षा हो गयी।

दिन ढला। शाम हो चली। वह लड़का अकेले धूमने निकल पड़ा। साथ में छाता तो था ही, उसने खोल लिया।

लेकिन, सूरज उस समय पश्चिम की ओर था तब भी छाता उसने पूरब को ओर ही रखा। ऐसा उसने इसलिए किया कि पश्चिम की ओर रखने से पिता की आज्ञा भंग होती।

रास्ते में उसे कई आदमी मिले। सबने कहा कि छाता ठोक से लगा लो; लेकिन वह किसीकी बात व्यापार मानने लगा! उसने सबसे यही कहा—“पिताजी की यही आज्ञा है। मैं पश्चिम की ओर छाता कैसे कर सकता हूँ!”



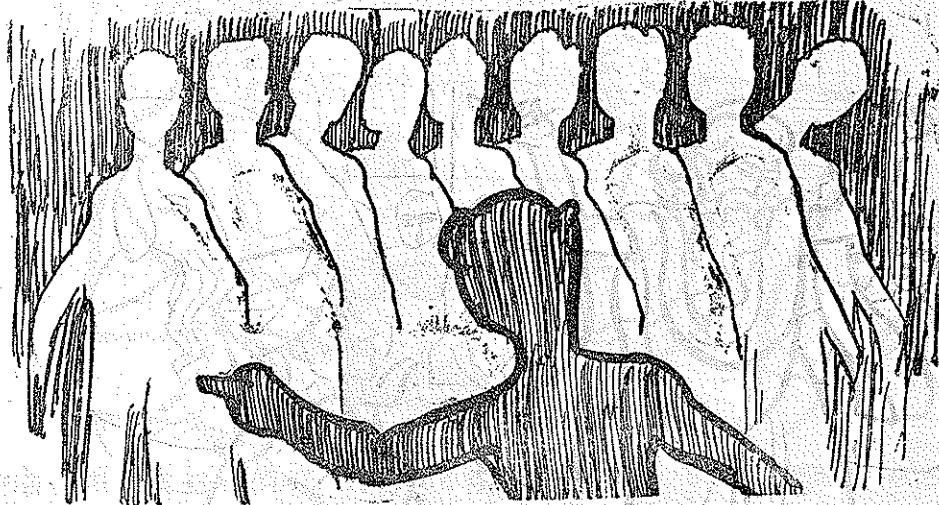
लोगों ने यह बात उसके पिता को बतायी। वह अपने अन्धे भक्त बेटे को सीख देने के लिए आया। उसने बेटे को समझाया कि मैंने सुबह छाता पूरब की ओर रखने के लिए इसलिए कहा था कि उस समय सूरज पूरब में था। सूरज की किरणें पूरब से आ रही थीं। और, इस समय सूरज पश्चिम में है; इसलिए छाता पश्चिम की ओर ही रखना चाहिए। यद्योंकि तुम्हें धूप से बचने के लिए इस बात का हमेशा ध्यान रखना होगा कि सूरज कहाँ है। आगर सूरज बीच आसमान में होता तो तुम्हें छाता सीधा रखना पड़ता।

बाप की सीख बेटे की समझ से आ गयी। वह समझ गया कि आज्ञा-पालन और अन्धे भक्ति दो अलग बातें हैं।

दसवाँ कौन है ?

दस लड़के मुसाफिरी के लिए निकले। घर से एक मील गये होंगे कि एक ने कहा—“हम लोग कितने हैं, जरा गिन तो लैं।”

सबने उसको राय मान ली। सभी एक कतार में खड़े हो गये। एक लड़का गिनने लगा—“एक…दो…तीन…पाँच…आठ…नौ।” नौ पर पहुँचकर गिनती रुक गयी। गिननेवाले को बड़ा अचरज हुआ। वह बोल उठा—“और दसवाँ कहाँ गया?”



दूसरे लड़के ने सोचा—“जरूर इसने गिनती में कहाँ भूल कर दी है। इसलिए मैं ही गिनकर क्यों न देख लूँ?”

वह कतार से बाहर निकल आया और सजगतापूर्वक गिनने लगा। फिर भी संख्या नौ पर ही रुक गयी।

बारी-जारी सबने गिना; लेकिन किसीको संख्या इस तक नहीं पहुँची। सबने एकमत से मान लिया कि यहाँ नौ लड़के ही हैं। एक कहाँ-न-कहीं रास्ते में छूट गया है। अब क्या किया जाय?

वे परेशान होकर घर लौट पड़े। आखिर दसवाँ कौन है, यह कैसे पता चल सकता था! क्योंकि हरएक गिननेवाला अपने को गिनना भूल जाता था।

अक्सर आदमी दूसरे की ओर देखना पसन्द करता है; लेकिन अपनी ओर नहीं। और, शायद इसीलिए उसे अपनी कमियाँ जल्दी नहीं दिख पातीं।

- रथारह -

आँखों में आँसू आ गये

एक आदमी झूम-झूमकर कीर्तन कर रहा था। उसकी दाढ़ी बहुत बड़ी थी! सामने बहुत लोग बैठे थे। उनमें एक किसान भी था। कीर्तन सुनते-सुनते उसकी आँखों में आँसू आ गये।



कीर्तन करनेवाले ने समझा—इस किसान का मन कितना एकाग्र है। इसका चित्त कितना निर्मल है कि भगवान् की याद आते ही गद्गद हो गया। इसकी आँखों में आँसू भर आये। उसने किसान से पूछा—“वयों भाई, तुम्हारी आँखों में आँसू कैसे आ गये?”

किसान ने कहा—“वया बताऊँ महाराज ! मेरे पास एक बकरा था। उसकी दाढ़ी भी आपकी दाढ़ी-जैसी ही थी। वह अभी कुछ हो दिनों पहले मर गया। आपकी दाढ़ी देखकर मुझे उसकी याद आ गयी।”

तीर्थों में नहाने से कोई पवित्र नहीं हो जाता

एक आदमी था। बहुत धनी था। वह तीर्थ-यात्रा के लिए चल पड़ा। उसके साथ उसका नौकर भी था। नौकर रसोई बनाता, खिलाता, कपड़े धोता, सभी काम करता।

- बारह -

लगातार तीन-चार साल तक वह धनी आदमी तोर्थों में घूमता रहा। वह बदरीनाथ गया, द्वारका गया, रामेश्वरम् गया और काशी भी गया।



कुछ दिनों बाद सभी तोर्थों में नहाकर वह घर पहुँचा। उसके सकुशल लौट आने से घरबालों की खुशी का ठिकाना न रहा। गाँवबाले भी आ-आकर उसे बधाई देने लगे। चारों ओर उसको तोर्थ-यात्रा को बड़ाई होने लगी। उसी दिन शाम को नौकर ने उसे तरकारी सिखायी। उस तरकारी से बदबू आ रही थी।

मालिक ने पूछा—“तुमने आज कैसा सड़ी तरकारी बनायी है?”

नौकर ने जवाब दिया—“मैंने तो आज आपके लिए बड़ी पवित्र तरकारी बनायी है मालिक।”

मालिक ने फिर पूछा—“पवित्र तरकारी से तुम्हारा क्या मतलब?”

नौकर ने बताया—“जब हम यहाँ से तोर्थ-यात्रा के लिए निकले थे तो मैंने अपने साथ कुछ आलू भी रख लिये थे। जैसे आपने तोर्थों में स्नान किया, वैसे ही मैंने आलू को भी हर तोर्थ में नहलाया। उसे गंगा में डुबोया, यमुना में डुबोया और उसे डुबोया कावेरी में।

“आज उसी आलू की मैंने तरकारी बनायी है। वह कितना पवित्र था! आप उसे गन्दा कैसे कह रहे हैं? आप सब तोर्थों में स्नान कर चुके हैं, उनकी महिमा जानते हैं। फिर भी ऐसा कहते हैं?”

सुनते हो मालिक समझ गया कि इसने मुझे सबक सिखाया है कि तोर्थों में नहाने से कोई पवित्र नहीं हो जाता। पचासों तोर्थों में नहाना एक बात है और दिल का पवित्र होना दूसरी बात।

मुनीम मालिक बन बैठा

एक व्यापारी था। उसके एक ही लड़का था। वह लड़के पर बहुत प्यार करता था। ज्यादा लाड़-प्यार के कारण वह लड़का पढ़-लिख नहीं सका। उसमें बुद्धि भी कम ही थी। व्यापारी के घर जाने पर लड़के ने एक मुनीम रखा। मुनीम दूकान की देखभाल करता था। बहुत समझदार था। इसलिए वह जो कुछ कहता लड़के को मान लेना पड़ता था। लड़का अगर कभी नहीं मानता तो मुनीम उसे धमकाता कि तुम मेरी बात नहीं मानोगे तो मैं काम छोड़कर चला जाऊँगा।

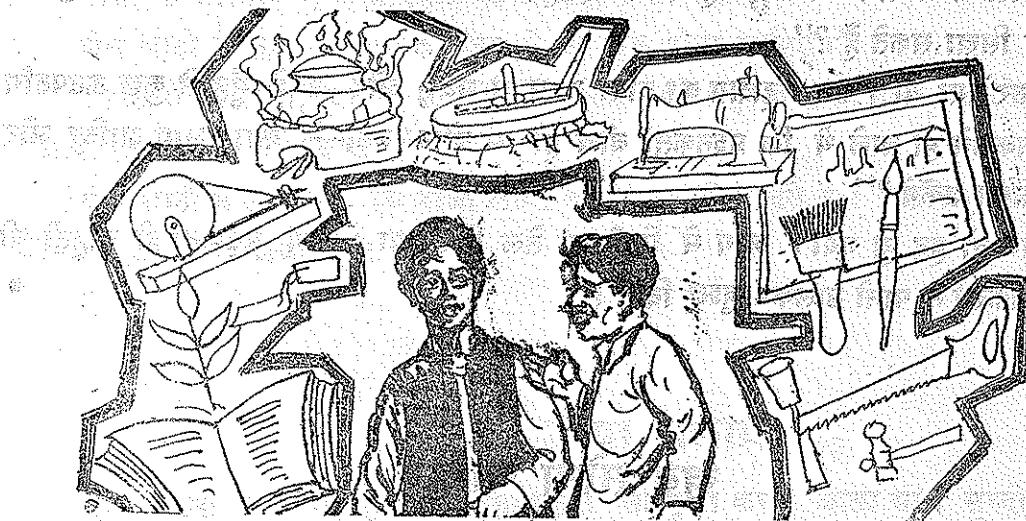


मुनीम की धमकी से लड़का घबरा जाता। उसकी समझ में नहीं आता कि मुनीम के न रहने पर दूकान कैसे चलेगी। इसलिए वह हमेशा मुनीम से दबा रहता, उसकी हर बात मान लेता। धीरे-धीरे मुनीम उस दूकान का मालिक ही बन बैठा।

मैं सिखा सकता हूँ

देश की सेवा की इच्छा रखनेवाल एक व्यक्ति से किसीने पूछा—“कहिये, अपनी समझ से आप कौन-सा काम अच्छा कर सकते हैं ?”

“मेरा ख्याल है कि मैं शिक्षण का काम अच्छा कर सकता हूँ। उसका मुझे शौक थी है।”—उस तरुण सज्जन ने उत्तर दिया।



“यह तो ठीक है। अबसर आदमी को जो आता है, मजबूरन् उसका उसको शौक होता ही है; पर यह कहिये कि आप कोई दूसरा काम कर सकेंगे या नहीं?”

उस व्यक्ति ने कहा—“जो नहीं, मुझे दूसरा कोई काम करना नहीं आयगा। मैं सिर्फ सिखा सकूँगा और शुद्ध विद्वास है कि मैं यह काम अच्छा कर सकूँगा।”

“हाँ-हाँ, अच्छा सिखाने में क्या शक है? कातना, धुनना या बुनना अच्छा सिखा सकेंगे?”

“नहीं, यह सब सिखाना नहीं आता।”—उस व्यक्ति ने कहा।

“तब सिलाई, रँगाई, बढ़ीगिरि तो सिखा सकेंगे?”

“नहीं, यह सब कुछ नहीं।”—उस सेवा को इच्छा रखनेवाले व्यक्ति ने कहा।

“रसोई बनाना, पीसना बगैरह घरेलू काम तो आप सिखा ही सकेंगे?”

“नहीं, काम के नाम से तो मैंने कुछ किया ही नहीं। मैं तो केवल शिक्षण का ही काम कर सकता हूँ।”

“भाई, तुमसे जो कुछ पूछा जाता है, उसमें तुम ‘नहीं’-‘नहीं’ कहते जाते हो और कहते हो कि शिक्षण का काम कर सकता हूँ। इसका क्या अर्थ है? क्या तुम खेती, बागवानी सिखा सकते हो?”

उस व्यक्ति ने जरा चिढ़कर कहा—“यह क्या पूछ रहे हैं आप? मैंने शुल्क में ही कह दिया कि मुझे दूसरा कोई काम करना नहीं आता। मैं साहित्य सिखा सकता हूँ।”

प्रश्न पूछनेवाले ने जरा मजाक में कहा—“अब आपने ठीक कहा। आपकी यह बात कुछ समझ में आयी। अच्छा, यह तो बताइये—वधा आप ‘रामचरित-मानस’ जैसो पुस्तक लिखना सिखा सकते हैं?”

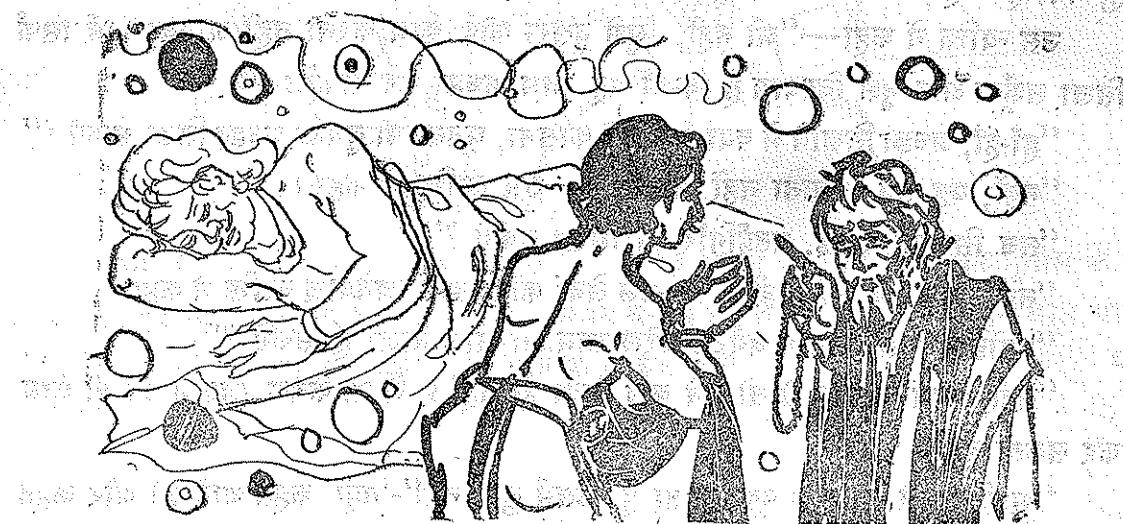
फिर क्या था। उन महाशय का पारा गरम हो गया; और उनके मुह से कुछ ऊटपटाँग शब्द निकलने ही वाले थे कि प्रश्नकर्ता बीच ही में बोल उठा—“क्या आप शान्ति और क्षमा सिखा सकते हैं?”

अब तो हव हो गयी। आग में मिट्टी का तेल गिर गया। आग भड़कना ही चाहती थी कि प्रश्नकर्ता ने पानी डालकर बुझा दिया।

खूब सोना चाहिए

एक था राजा। वह शेख सादी के पास पहुँचा और बोला—“मुझे कुछ ज्ञान दीजिये।”

शेख सादी ने पूछा—“आप कौन हैं?”



वह बोला—“मैं राजा हूँ।”

शेख सादी ने कहा—“आप रात को सोते तो होगे ही?”

उसने कहा—“सोता तो हूँ, लेकिन बहुत कम।”

“हमारी सलाह है कि आपको रात में खूब सोना चाहिए।”

- सौलह -

फिर शेख सादी ने पूछा—“आप दिन में भी सोते हैं ?”

राजा ने बताया—“कभी-कभी एक-आध घण्टे सो लेता हूँ ।”

शेख सादी ने कहा—“आपको दिन में भी खूब सोना चाहिए !”

“रात में भी सोना, दिन में भी सोना”—राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने पूछा—“आप ऐसा उपदेश क्यों दे रहे हैं ?”

शेख सादी ने समझाया कि राजा लोगों को बहुत पीड़ा देते हैं। इसलिए वे जितना सोते रहें, उतना ही अच्छा है।

दिल का दीया जलायें

एक आदमी था। वह हर रोज हनुमानजी की पूजा करने आता था। सरदी, गरमी, बरसात में भी वह बराबर आता था। एक दिन मैंने उससे पूछा—“क्योंजी, तुम हनुमानजी की पूजा इतने नियम से क्यों करते हो ?”



उसने कहा—“मैंने हनुमानजी से मनौती मानी थी। मुझ पर मुकदमा चल रहा था। मैंने मन-ही-मन मनाया कि प्रभो, यह मुकदमा जीत जाऊँगा तो आपके पास आकर नित्य-प्रति दीया जलाया करूँगा। मैं वह मुकदमा जीत गया। तभी से इतने वर्ष हो गये, नित्य दीया जलाया करता हूँ ।”

मैंने पूछा—“वह मुकदमा क्या था ?”

उस बेचारे ने खुले हिल से सब बता दिया। उसने किसीको जमीन दबा ली थी। इसके विरोध में उस भूमिहीन ने मुकदमा दायर कर दिया।

अदालत में कागज की माया चलती है। वे चारे भूमिहीन के पास वे कहाँ से आते ? इधर इसे बकील अच्छा मिल गया और यह मुकदमा जीत गया।

फिर कहने लगा—“मुझ पर भगवान् की कृपा हुई !”

मैंने कहा—“भलेमानस, यह कृपा है या अकृपा ?”

लेकिन, वह इसे कृपा ही समझ बैठा है। बरसों से हनुमानजी के सामने दीया जलाया है; पर दिल का दीया नहीं जला पाया। बुरी इच्छा सफल होती है तो वह भगवान् की कृपा नहीं, अकृपा है। शुद्ध इच्छा पूरी हो; तभी समझना चाहिए कि भगवान् की कृपा है।

त जीने की सुविधा

एक आदमी था। उसे अपना घर अमंगल लगने लगा। वह गाँव में चला गया। वहाँ उसे गत्वगी दिखाई दी। फिर क्या था, वह जंगल में चला गया।



वह जंगल में एक पेड़ के नीचे बैठा ही था कि एक पक्षी ने उसके सिर पर बीट कर दी।

“यह जंगल भी अमंगल है !”—ऐसा कहकर वह नदी में आ खड़ा हुआ।

नदी में उसने देखा कि बड़ी मछलियाँ छोटे मछलियों की तरा रही हैं। उसे बड़ी घुणा हुई। “उसने सोचा—“यह तो सारी सृष्टि ही अमगल है। यहाँ मरे बिना छुटकारा नहीं है”, ऐसा सोचकर वह पानी से बाहर निकला और उसने चिता जलायी।

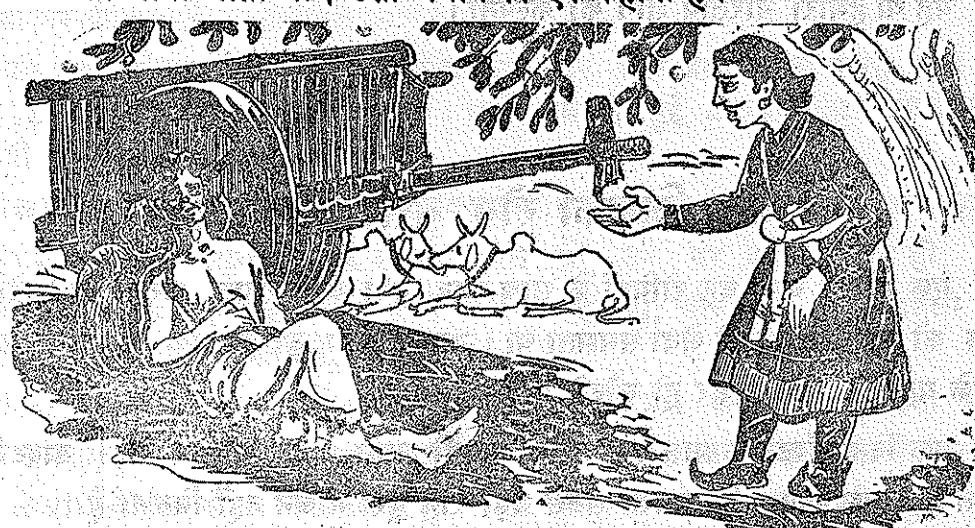
तभी एक सज्जन आये और बोले—“भाई, यह मरने की तैयारी क्यों?”

उस सज्जन ने कहा—“तेरा यह गन्दा शरीर और चरबी आदि जलने लगेगी तो यहाँ कितनी बदबू फैलेगी? पास में ही हथलोग रहते हैं, हम सब कहाँ जायेंगे? एक बाल के जलने से कितनी दुर्गति होती है? फिर तेरी सारी चरबी जलेगी तो क्या होगा?”

वह आदमी परेशान होकर बोला—“इस दुनिया में न जीने की सुविधा है, न मरने की जगह।”

ज्ञानी मिल गया

एक जनाने में अपने देश में बहुत विद्या थी। वह विद्या पूर्व से उड़कर पश्चिम में चली गयी है और वहाँ से उड़कर यहाँ आना चाहती है। लेकिन, पुराने जमाने में भारत को विद्या का स्थान माना जाता था। उसी जमाने की एक कहानी है।



एक राजा था। उसने एक ज्ञानी ब्राह्मण का नाम सुन रखा था। राजा ने अपने मंत्री से कहा कि उस ज्ञानी ब्राह्मण की खोज लाओ। उसके चरणों में बैठकर मैं ज्ञान सीखूँगा।

मंत्री सारा शहर धूम आया। उसे जानी कहीं न मिला।

राजा ने कहा—“तुमने उसे कहाँ दूँड़ा ?”

मंत्री ने कहा—“मैंने उसे सारे शहर में दूँड़ा है।”

राजा ने डाँटकर कहा—“भला, जानी कहीं शहर में रहता है? जो किसी जंगल में खोज।

मंत्री जंगल में चला गया। उजाड़ जंगल में एक गाँव था। गाँव के बाहर एक घनी छाँवदाला पेड़ था। पेड़ के नीचे एक बैलगाड़ी खड़ी थी। बैलगाड़ी की छाँव में एक आदमी बैठा था।

मंत्री ने पूछा—“राजा ने जिस ज्ञानी को खोज के लिए मुझे भेजा है, वहा तुम वही ज्ञानी ब्राह्मण हो?”

वह बोला—“हाँ।”

फिर मंत्री ने राजा के पास आकर कहा—“ज्ञानी मिल गया महाराज।”

राजा ने पूछा—“कहाँ मिला ?”

मंत्री ने बताया—“जंगल में।”

यह थी हमारी भारतीय ज्ञान की कल्पना।

जैसा जिसका रोग, वैसी उसकी इच्छा

एक डॉक्टर था। वह रोगियों के साथ बेहद दया का बरताव करता था। रोगियों की सेवा को वह भगवान् की सेवा समझता था। उसका नाम दूर-दूर तक फैल गया था। रोगी उसके यहाँ से अच्छे होकर ही लौटते।

एक दिन डॉक्टर के पास एक गरीब आदमी आया। वह बीमार था। डॉक्टर ने उसे देखते ही समझ लिया कि इसका सबसे बड़ा रोग पूरा भोजन नहीं मिलना है।

डॉक्टर ने उसे अच्छी तरह खिलाना-पिलाना शुरू कर दिया। कुछ ही दिनों में वह भला-चंगा हो गया और डॉक्टर से आज्ञा लेकर अपने घर चला गया।

उस गरीब आदमी के गाँव में एक श्रीमान् रहते थे। उनका शरीर इतना भारी-भरकम था कि चलने में भी कठिनाई होती थी। उन्हें मालूम हुआ कि डॉक्टर रोगियों को दवा बढ़े प्रेम से करता है और खब खिलाता-पिलाता है। फिर क्या था! वह भी डॉक्टर के पास दवा कराने के लिए पहुँच गया।



डॉक्टर ने श्रीमान् को अच्छी तरह देखा और समझ लिया कि इसे कोई रोग नहीं है। इसकी सारी बीमारी उपचास कराने से भाग जायगी। उसने श्रीमान् को रख लिया और दवा शुरू कर दी।

सबसे पहले डॉक्टर ने श्रीमान् का धी-शवकर और मैदा-जैसी चीजें खाना बन्द करा दिया। फिर उपचास कराना शुरू किया। उन्हें उबालो हुई तरकारी खाने के लिए दी जाने लगी।

डॉक्टर का यह व्यवहार श्रीमान् को बिलकुल नहीं सुहाया। उसने बिगड़कर कहा—“तुम गरीब मरीजों के साथ प्रेम का बरताव करते हो, उन पर दया दिखाते हो, उन्हें लड्डू तथा दूसरी अच्छी-अच्छी चीजें खाने के लिए देते हो; और मुझे सिर्फ उबली तरकारी खिलाते हो, क्या मैं गाय-भैस हूँ?”

डॉक्टर ने जवाब दिया—“मैं तुम पर भी उतना ही प्रेम करता हूँ, जितना गरीब पर। मैं सबको एक आँख से देखता हूँ। तुम्हारे बरीर का वजन बढ़ गया है; इसलिए तुम्हारे लिए धी-शवकर खाना भना किया है। इससे तुम्हारा वजन घटेगा और तुम स्वस्थ होगे। मेरा यह काम तुम्हारे साथ मेरे प्रेम को प्रकट करता है। जिस गरीब को खाना मिलता हो उसे अच्छी तरह खिलाना ही उस पर प्रेम करना है।”

- इक्कीस -

सवाल हल हो गया

एक धनी बाप का बेटा खेलने निकला। दोपहर की चिलचिलाती धूप थी। नंगे पांव होने से उसके पैर जलने लगे।

आखिर था तो धनबान् का ही बेटा! उसका दिमाग बहुत तेज था। जूट उसने तरकीब ढूँढ निकाली। उसने सोचा—“अगर सारी धरती पर चमड़ा बिछा दिया जाय तो इस गरमी में भी पांव नहीं जलेंगे।”



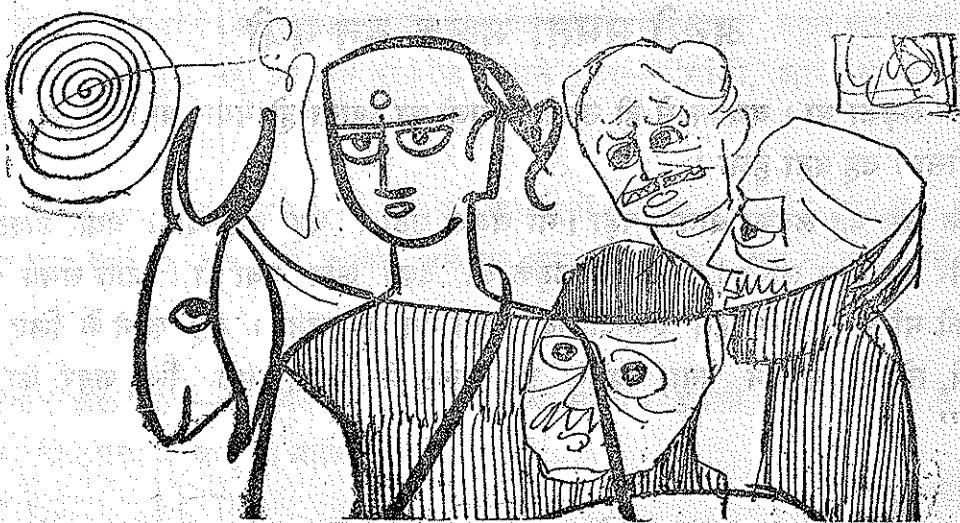
बह लड़का दौड़ा-दौड़ा अपने पिता के पास पहुँचा और उसने कहा—“पिताजी, धरती तवे-सी जल रही है, नंगे पांव चला नहीं जाता। अगर पूरी धरती पर चमड़ा बिछा दिया जाय तो पांव न जलें।”

बाप को बेटे की बुद्धि पर आश्चर्य हुआ। उसने अपने को बहुत रोका, फिर भी हँसी आ ही गयी। हँसी को रोकते हुए उसने कहा—“अरे पागल, सारी धरती को चमड़े की साड़ी पहनाने के बदले, अगर तू खुद ही अपने पैरों में जूते पहन ले तो तेरा मनोरथ पूरा हो जायगा।”

“हाँ पिताजी, यह तो बड़ी आसान बात है।”—लड़का बोल उठा।

ब्राह्मण ने विवेक खो दिया

एक ब्राह्मण था। वह यज्ञ के लिए एक बकरा लिये जा रहा था। दूर से तीन ठगों ने उसे देख लिया। उन्होंने ब्राह्मण से बकरा हथियाने को योजना बनायी। वे एक-एक फलांग के फासले पर ब्राह्मण के शरते में खड़े हो गये। ब्राह्मण जैसे ही पहले के पास से गुजरा, वह पूछ बैठा—“पण्डितजी! यह कुत्ता लेकर आप कहाँ जा रहे हैं?”



ब्राह्मण ने उसे फटकारा—“अरे मूर्ख, तू अन्धा है क्या? देखता नहीं, यह बकरा है।”

ठग ने बुझी हुई आवाज में कहा—“आप नहीं मानते तो मैं क्या करूँ; लेकिन यह है कुत्ता ही।”

ब्राह्मण आगे बढ़ चला। वह थोड़ा ही आगे बढ़ा कि दूसरा ठग मिला। उसने अचरज से कहा—“अरे पण्डितजी, सबेरे-सबेरे यह क्या देख रहा हूँ। आप कुत्ता लेकर कहाँ जा रहे हैं? इसे दूर फेंकिये महाराज; जो भी आपकी गोद में कुत्ता देखेगा, वह क्या कहेगा?”

ब्राह्मण थोड़ा शिक्षका। उसने एक बार ऊपर से नीचे तक उसे देखा। जब उसे चिश्वास हो गया कि यह बकरा ही है तो वह आगे बढ़ चला। लेकिन, उसके मन में शंका के बीज तो जम ही गये।

ब्राह्मण कुछ दूर और आगे बढ़ा तो तीसरा ठग मिला। उसने पास आते ही फटकारना शुरू किया—“अनर्थ हो गया महाराज, अनर्थ हो गया! राम-राम-राम! आपने यह क्या किया!! भला जो देखेगा, कहेगा क्या?”

ब्राह्मण को विश्वास हो गया कि यह बकरा नहीं, कुत्ता ही है। अपनी आँखों से उसका विश्वास उठ गया। उसने विवेक खो दिया और बकरे को झटके से दूर फेंक दिया। उसको इतनी धूणा हो गयी कि उलटकर देखा भी नहीं, चल पड़ा।

अन्धी ममता भक्षक बन गयी

एक लड़का था। बचपन में ही उसके पिताजी का देहान्त हो गया था। माँ ने ही उसे पाला-पोसा। वह बड़ा हुआ।

एक दिन वह लड़का बीमार पड़ा। माँ घबरा उठी। वह दौड़ी-दौड़ी गयी डॉक्टर के पास और उसे बुला लायी। डॉक्टर ने लड़के को देखा और दवा दी। जाते समय उसने लड़के की माँ से कहा—“इसे एक-दो दिन कुछ मत खिलाना। यह खाने के लिए रोये-चिलाये, तो भी कुछ न देना; क्योंकि इस हालत में खाना इसके लिए जहर का काम करेगा।”



लड़का डॉक्टर को दवा से थोड़ा ठीक हुआ। माँ ने खुशी से लड्डू बांटे। लड्डू देखकर लड़के के मुँह में पानी भर आया। उसने माँ से कहा—“माँ, मुझे बहुत जोर की भूख लगी है।”

- चौबीस -

माँ ने उसे समझा था—“बेटा, डॉक्टर ने मता किया है। अभी रुक जा; अच्छा होने पर
तुझे खूब लड़ू खिलाऊंगी।”

लेकिन, वह लड़का अपने को रोक न सका, रो पड़ा। माँ से उसके आँसू न देखे गये।
उसने उसके हाथ में लड़ू थमा दिया।

दो दिन बाद डॉक्टर फिर आया। उसने देखा कि लड़के की हालत बहुत खराब हो चुकी है। उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था। फिर उसने पूछा—“माँजी, आपने लड़के को कुछ खिलाया तो नहीं?”

माँ ने कहा—“थोड़ा खिलाया तो था। यह कई दिनों से भूखा था और बार-बार खाना माँग रहा था। इसलिए जब मैंने इसकी तबीयत जरा ठीक होते देखी तो कुछ खाने को दे दिया।”

डॉक्टर बोल उठा—“आपने तो अनर्थ कर दिया माँजी। इसकी दवा मेरे वश में नहीं रही। अब तो इसका भगवान् ही मालिक है।”

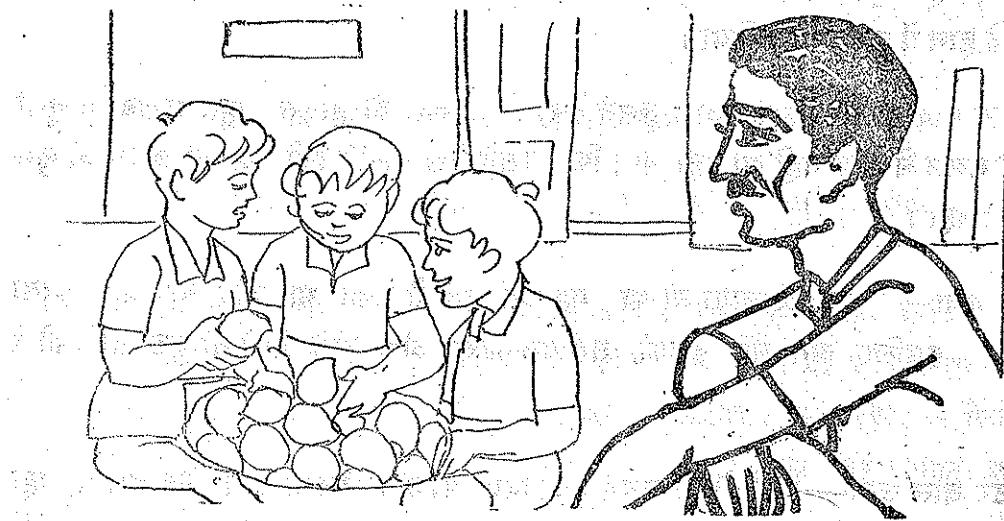
डॉक्टर चला गया। लड़के की तबीयत धीरे-धीरे बिगड़ती ही गयी और एक दिन उसने दम तोड़ दिया।

अन्धी ममता ऐसो ही भक्षण बन जाती है।

कितना सुख मिल रहा था !

एक आदमी था। वह अकेला रहता था। उसे अपनी जिन्दगी बड़ी नीरस लगती थी। हमेशा खोया-खोया रहता। खाने-पीने की उसे कमी न थी, फिर भी उसके चेहरे पर हँसी नहीं आ पाती थी।

एक दिन वह बाजार गया। उसने देखा कि पके-पके मीठे आम बिक रहे हैं। उसने खरीद लिये। वहीं बैठकर उसने भरपेट आम खाये; लेकिन फिर भी उसे आनन्द नहीं मिला। मीठे आम भी उसे फीके लगे।



कुछ दिनों बाद उसकी शादी हो गयी। उसके बाल-बच्चे भी हो गये। एक दिन वह धूमता-फिरता बाजार जा पहुँचा। उसने देखा—मीठे-मीठे आम बिक रहे हैं। उसने खरीद लिये। लेकिन, इस बार वह उन्हें खुद न खा सका। वह आम लेकर घर आया। उसे आते देखकर बच्चे चिल्ला उठे—“बाबूजी आये! बाबूजी आये!”

बच्चों ने सारे आम झपट लिये और वे बड़ी मस्ती से एक-एक करके खाने लगे। वह आदमी बच्चों को खुशी-खुशी आम खाते देख रहा था। उसे कितना सुख मिल रहा था, कहा नहीं जा सकता।

देवर्षि नारद को उत्तर मिल गया

नारद देवर्षि कहे जाते थे। वे बराबर विहार करते रहते थे और दूसरों की भलाई की बात सोचते रहते थे। वे कोई बिगड़ता काम देख नहीं पाते थे।

- छब्बीस -

एक बार देवर्षि नारद के मन में प्रश्न उठा कि क्या मुझसे भी बढ़कर कोई भगवान् का भक्त है ? वे तुरत पहुँचे भगवान् के पास और उन्होंने पूछा—“भगवन्, क्या मुझसे भी बढ़कर आपका कोई भक्त है ?”



भगवान् ने कहा—“इसका उत्तर तुम्हें अभी मिल जायगा । पहले एक काम करो कि यह तेल से भरा बरतन लो और इस गाँव का पूरा एक चक्कर लगा आओ । देखना, इस बरतन से एक बूँद भी तेल धरती पर न गिरे ।”

नारद ने तेल से भरा बरतन उठा लिया और गाँव की प्रदक्षिणा करने निकल पड़े । तेल को एक बूँद भी धरती पर न गिरे; इसलिए उन्हें बड़ी सावधानी से चलना पड़ रहा था । उनका सारा ध्यान बरतन में भरे तेल की ओर था ।

नारद सारे गाँव का सावधानीपूर्वक चक्कर लगा आये । तेल की एक बूँद भी धरती पर नहीं गिरी । लौटने पर भगवान् ने उनसे पूछा—“जितनों देर तक तुम तेल से भरा बरतन लेकर गाँव की प्रदक्षिणा कर रहे थे । उतनों देर में तुमने मेरा स्मरण कितनी बार किया ?”

नारद ने कहा—“मेरा सारा ध्यान तो इसमें था कि तेल की एक बूँद भी न गिरे । मैं तो दो घोड़ों पर सवार था, फिर आपका ध्यान कैसे करता ?”

भगवान् बोले—“अब तुम्हों बताओ कि गृहस्थ धर और संसार के बोझ से लदा होकर भी यदि घड़ीभर समय निकालकर मेरा स्मरण कर लेता है तो क्या कम है ?”

देवर्षि नारद को अपने प्रश्न का उत्तर मिल गया ।

शंका डुबोती है

एक गुरु था । बड़ा जानी था । उसके अनेक शिष्य थे ।
शिष्यों के मन में गुरु के लिए बड़ी श्रद्धा थी ।



एक दिन एक शिष्य कहों जा रहा था । आसमान में काले-काले छादल घिर आये । बिजली चमकने लगी । शिष्य अभी कुछ ही दूर गया था कि वर्षा होने लगी । शिष्य लौट आया । उसने गुरु से पूछा—“गुरुजी, बड़े जारों की वर्षा हुई है । रास्ते में नदी-नाले पड़ेंगे । उनमें बाढ़ आ गयी होगी । उन्हें मैं पार कैसे करूँगा, मुझे तैरना तो आता नहीं ?”

गुरु ने कहा—“भगवान् सबको मदद करता है । जा, उसका नाम लेकर तू नदी-नालों को पार कर जा ।”

शिष्य के मन में गुरु के प्रति बहुत श्रद्धा थी । उसका डर जाता रहा । वह निकल पड़ा यात्रा पर । कुछ दूर जाने पर उसे एक नाला मिला । उसने श्रद्धा से भगवान् का नाम लिया और नाला पार कर गया ।

हूसरे दिन गुरु को उसी गाँव जाना पड़ा । उन्होंने सोचा—“मेरे बताने पर शिष्य पार कर गया, फिर मेरे लिए क्या कठिनाई होगी ? मैं तो उस नाले को पार कर ही जाऊँगा ।” गुरुजी चल पड़े । लेकिन नाले के करीब पहुँचे तो उनके मन में शंका हुई । वे सोचने लगे—“क्या सचमुच मैं इसे पार कर जाऊँगा ?

डरते-डरते गुरुजी पानी में उत्तर पड़े । उनके मन में शंका तो थी ही । अभी दी-चार कदम भी पानी में नहीं पहुँचे होंगे कि उनका पैर काँप उठा और वे बह चले । उन्होंने बहुत हाथ-पाँव मारे, लेकिन सब बेकार । वे डूब ही गये । उन्हें उनके मन की शंका ने डुबा ही दिया ।

- अट्टाईस -